सदगुरू कबीर के निर्वाण स्थली 'मगहर' एक –परिचय

विश्व में कबीर साहेब ऐसे अनूठे व्यक्तित्व के महापुरूष हैं जो एक ही साथ कब्र में भी दफन हैं तथा सामाधिस्थ भी। वे हिन्दू और मुसलमान को ही नहीं अपितु सभी मतावलम्बियों को अपने निर्वाण स्थली की ओर आकर्षित कर रहे हैं। विश्व का यह अद्वितीय स्थान मगहर के नाम से विख्यात है जहां पर एक ऐसी समाधि है जो मानव मात्र को एकता का संदेश देते हुए विश्व नेतृत्व की क्षमता रखती है। यह स्थली गोरखपुर–लखनऊ मार्ग पर गोरखपुर से पश्चिम लगभग 24 कि0मी0 की दूरी पर जनपद–संत कबीर नगर में आमी नदी के तट पर स्थित है।

मगहर का नाम मार्गहर से मगहर पड़ा। बोध गया, राजगीर, कुशीनगर होते हुए बौद्ध इस रास्ते कोपिया, कपिलवस्तु, लुम्बनी तथा श्रावस्ती के लिए जाते थे। यहां मार्ग मे वे लूट लिये जाते थे। बौद्ध भिक्षुओं ने इस स्थान को मार्गहर नाम दे दिया जो कालान्तर में मगहर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

मगहर से बहुत पहले भंयकर अकाल व सूखा पड़ा। जनता की त्राहि–त्राहि से उद्धेलित हो कर यहा के नवाब बिजली खाँ पठान मगहर रह रहे अपने श्रद्धेय सूफी फकीर से वर्षा होने का उपाय पूछा। फकीर ने कहा एक फकीर कबीर साहब, काशी में रहते हैं, वे सर्व समर्थ है, उनकी बात खुदा से होती है। फकीर के निर्देश पर नवाब बिजली खाँ काशी आये। वे एक भक्त और सेवक की तरह कबीर साहब के पास गये तथा इस अंचल और कबीर साहेब के पूर्व परिचित कर्म क्षेत्र मगहर की पीड़ा और अकाल के बारे में निवेदन किया । जनता की पीड़ा को सुनकर करुण वत्सल सद्गुरु कबीर साहेब मगहर आ गये।

मगहर में रहते कबीर साहब की अवस्था 119 वर्ष हो चुकी थी। एक दिन कबीर साहब ने अपने अनुयायी श्रुति गोपाल साहब, नवाब बिजली खाँ पठान, कमाल साहब, कमाली साहब तथा भक्तों को बुलाकर अपने देहावसान की पूर्व सूचना दी। अंतिम उपदेश दिया तथा माघ शुक्ल एकादशी के दिन सन 1518 ई0 को एक विशाल पुष्प गुच्छ बनाकर उसी के भीतर कबीर साहेब साधना के लिए प्रविष्ट हो गये। जब यह स्पष्ट हो गया कि कबीर साहेब आत्मदेह त्याग कर गये तो पर्ण कुटी खोली गयी तब कबीर साहेब का शव नही मिला मात्र पुष्प मिला। हिन्दुओं ने आधे पुष्प से समाधि बनायी तथा मुसलमानों ने आधे पुष्प को दफन कर मजार बनाया। दोनो ही स्मारक अगल बगल विद्यमान है।

महान सूफी संत कबीर के नाम पर ही इस नव सृजित जनपद का नाम 'संत कबीर नगर' पड़ा।

कबीर निर्वाण स्थली मगहर पर साम्प्रदायिक सौहार्द के प्रतीक संत कबीर नगर के प्रति सर्मपित श्रद्धापर्व प्रत्येक वर्ष 12 जनवरी से 16 जनवरी तक 'मगहर महोत्सव' के रुप में आयोजित किया जाता है।

PDF created with pdfFactory trial version www.pdffactory.com